मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 52 अंक 7 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
जुलाई 2016 | बहाई वर्ष : 173

विश्व न्याय मन्दिर

...हमें अपनी शक्तियाँ बच्चों की कक्षाओं एवं किशोर समूहों के विस्तार की दिशा में लगाने की आवश्यकता है..... इस उद्देश्य के लिए पूरक विषयों की वृद्धि स्वाभाविक रूप से होने दी जाए जो गांवों और पड़ोस में समुदाय के निर्माण की क्रमशः गतिशील होती जा रही प्रक्रिया का एक प्रतिफल होगा।

—12 दिसम्बर 2011

राष्ट्रीय कार्यालय के जन–सम्पर्क विभाग की गतिविधियाँ

• ईरान के सात बहाईयों की कैद से मुक्ति के लिये चलाये गये विश्वव्यापी अभियान की आठवीं वर्षगांठ की श्रृंखला में चंडीगढ़ के बहाई समुदाय द्वारा मोमबत्तियां जलाकर ईरान के यारान की रिहाई के लिये गुहार लगाई गई। यह आयोजन एक ऐसे सार्वजनिक स्थान पर किया गया जहाँ से होकर चंडीगढ़ के अधिकांश गणमान्य व्यक्ति गुजरते हैं और जहाँ आसानी से मीडिया की निगाह चली जाती है। चंडीगढ़ के दो प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और 'पंजाब केसरी' ने इस आयोजन के समाचार प्रकाशित किये।



चंड़ीगढ़ के बहाई ईरान के सात कैदियों के लिए प्रदर्शन करते हुए

• लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभा ने भी ईरान में यारान के 7 अग्रणी बहाईयों को बंदी बनाये जाने को अनुचित ठहराया और चलाये गये विश्वव्यापी अभियान के साथ कदम–से–कदम मिलाते हुये एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया। यारान की कैद से मुक्ति के लिये विशेष प्रार्थनायें भी की गई। एक अन्य प्रार्थना सभा का आयोजन लखनऊ की आध्यात्मिक सभा द्वारा बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण की रात्रि में किया गया। सौ से भी अधिक युवाओं ने इसमें हिस्सा लिया।



यारान की रिहाई के लिए प्रार्थना के लिए एकत्रित लखनऊ के मित्रगण

इसके पहले ट्वीटर पर एक

शेष पृष्ठ 4 पर

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ की गतिविधियाँ

• मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ रीजन के लिए 30 मई से 6 जून तक रूही पुस्तक–7 के सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें सलाहकार महोदय का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस सेमिनार में पूरे रीजन से 95 प्रतिभागी शामिल हुए। इन प्रतिभागियों ने भोपाल क्लस्टर के अलग–अलग 6 क्षेत्रों में गृह भ्रमण कर शिक्षण किया। इस सेमिनार के दौरान सभी मित्रों को मिलाकर 16 लोगों ने प्रभुधर्म में अपनी आस्था व्यक्त की। भोपाल क्लस्टर में इस सेमिनार के दौरान 42 गतिविधियाँ शुरू हुईं एवं 14 गतिविधियों को और शुरू करने की योजना बनायी गयी।



रूही पुस्तक–7 का अध्ययन करने वाले प्रतिभागी

• छत्तीसगढ़ रीजन के कांकेर समुदाय में 10 से 16 जून तक रूही पुस्तक–5 का सेमिनार लर्निंग साइट के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, जिसका स्वरूप यह था कि इस सेमिनार में शामिल मित्र सुबह से 5 बजे तक रूही पुस्तक–5 का एवं रूही पुस्तक–5 के आधार पर तैयार किया गया प्रपत्र जिसका नाम रिव्यू डाक्यूमेंट था उसका अध्ययन किया जाता था। उसके बाद सभी मित्र कांकेर एवं नरहरपुर क्लस्टर के गांव में टीम बनाकर हर रोज टीचिंग करने के लिए जाते थे। तत्पश्चात् ये मित्र रात में 9 बजे गांव से टीचिंग करके वापस आते और फिर अपने–अपने अनुभवों को एक–दूसरे के साथ बांटते थे।

इस सेमिनार के दौरान कांकेर एवं नरहरपुर क्लस्टर में 56 गतिविधियाँ नई शुरू हुईं। इन बढ़ी हुई गतिविधियों को देखते हुए मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ रीजन में कांकेर का कन्हारपुरी गांव ऐसा गांव बन गया जिसने सौ गतिविधियों को प्राप्त कर लिया।



रूही पुस्तक–5 का अध्ययन करने वाले प्रतिभागी

इस शुभअवसर पर सभी मित्रों ने प्राप्त इस उपलब्धि पर केक काटकर प्रार्थनामय वातावरण में पूरे समुदाय के लिए प्रार्थना की और रात में छत्तीसगढ़ी संस्कृति के आधार पर नृत्य भी किया।

इस अंक में

अग्रदूत दिव्यात्मा बाब की शहादत का रहस्य

'बाब' का अर्थ है द्वार। महात्मा बाब एक नये राज्य (पृथ्वी पर प्रभु के राज्य) के द्वार थे।

महात्मा बाब का जन्मस्थान दक्षिण ईरान का सुन्दर नगर शीराज़ था। वे अली मोहम्मद कहलाते थे तथा स्वयं ईश्वरावतार हज़रत मोहम्मद के वंशज थे। उनके जन्म के कुछ समय पश्चात् ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। अतः उन्हें उनके मामा की देखरेख में रखा गया। बाल्यावस्था में उनको एक शिक्षक के पास भेजा गया जो कुरान तथा प्राथमिक विषय पढ़ाता था। परन्तु बाल्यावस्था से ही महात्मा बाब अन्य बालकों से भिन्न थे। वे सदा कठिन प्रश्न पूछते तथा स्वयं ही इस प्रकार उन प्रश्नों का उत्तर देते कि बड़े बूढ़े भी सुनकर दंग रह जाते। जब दूसरे बालक प्रायः खेलकूद में व्यस्त होते तो वे किसी वृक्ष की छाया में या किसी और एकान्त स्थान पर प्रार्थना में मग्न मिलते।

जब महात्मा बाब ने ईश्वरावतार के रूप में अपनी वास्तविकता प्रकट की तो तत्पश्चात् उनके मामा तथा शिक्षक दोनों ने ही उनमें विश्वास कर लिया क्योंकि वे उनको बचपन से जानते थे और उन्होंने उनमें तथा अन्य बालकों में भिन्नता का अवलोकन कर लिया था। उनके मामा बाद में उस प्रभुधर्म के लिए शहीद हो गए जो उनके भानजे महात्मा बाब द्वारा प्रकट हुआ था।

महात्मा बाब अभी नवयुवक ही थे जब उन्होंने लोगों को उस संदेश के बारे में बताया जो प्रभु ने उनको दिया था उनकी आयु उस समय केवल 25 वर्ष की थी। महात्मा बाब द्वारा ईश्वर के सन्देशवाहक के रूप में अपने मिशन की घोषणा से पूर्व दो ऐसे प्रसिद्ध शिक्षक थे, जिन्होंने कहा था कि कुरान तथा पवित्र परम्पराओं के अनुसार इस्लाम का प्रतीक्षित अवतार शीघ्र ही प्रकट होंगे। ये दो शिक्षक थे शेख अहमद तथा उनका प्रमुख शिष्य सैय्यद काज़िम। क्योंकि वे सन्त तथा अत्यन्त ज्ञानी पुरुष थे इसलिए बहुत से लोगों ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया और अपेक्षित अवतार का स्वागत करने के लिए उन्होंने स्वयम् को तैयार कर लिया।

सैय्यद काज़िम के स्वर्गवास के बाद उनके अनुयायी अपेक्षित अवतार की खोज में भिन्न–भिन्न दिशाओं में फैल गये। उनमें से मुल्ला हुसैन नामक एक विद्वान तथा धर्मात्मा नवयुवक के नेतृत्व में कुछ लोगों ने 40 दिनों तक व्रत तथा प्रार्थना में बिताने के बाद शीराज़ की ओर प्रस्थान कर दिया।

उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिल गया। शीराज़ के द्वार के समीप मुल्ला हुसैन की भेंट एक दीप्तिमान नवयुवक से हुई जो उनके स्वागत के लिए आया था। वह नवयुवक और कोई नहीं स्वयं महात्मा बाब ही थे।

उन्होंने मुल्ला हुसैन को अपने घर पर आमंत्रित किया और वहाँ पर लगभग 172 वर्ष पूर्व, 23 मई सन् 1844 को महात्मा बाब ने स्वयम् को अपेक्षित अवतार के रूप में प्रकट कर दिया।

शीराज़ के द्वार से बाहर महात्मा बाब पर दृष्टि डालते ही मुल्ला हुसैन का हृदय उनकी ओर खिंच गया था परन्तु अब जबकि उनके आतिथ्य ने यह महान घोषणा की तो उन्होंने कोई प्रमाण माँगा ताकि वह जान सके कि महात्मा बाब ही वे अपेक्षित अवतार हैं। महात्मा बाब ने कहा कि किसी प्रभु अवतार द्वारा प्रकट किये गये दैवी श्लोकों से बड़ा दूसरा प्रमाण नहीं हैं। तब कलम और कागज उठाकर उन्होंने अपना पहला पावन लेख लिखा। हालांकि बाल्यवस्था में थोड़े से समय के अतिरिक्त उन्होंने किसी पाठशाला में कभी प्रवेश नहीं लिया था फिर ईश्वर के सभी अवतारों की तरह महात्मा बाब को भी वह गूढ़ ज्ञान प्राप्त था जो ईश्वर का उपहार था। उन्होंने बड़ी तेज़ी के साथ लिखा और लिखने के साथ–साथ उन श्लोकों का धीमे तथा मीठे स्वर में उच्चारण किया। मुल्ला हुसैन को किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। अश्रुपूर्ण नेत्रों के साथ वे ईश्वरावतार के सामने झुक गये।

मुल्ला हुसैन महात्मा बाब के पहले अनुयायी थे। महात्मा बाब ने उनको "बाब–उल्–बाब" अर्थात "द्वार का द्वार" का उपनाम प्रदान किया। वह रात एक नये युग की उषा थी। बहाई पंचांग इसी वर्ष से आरम्भ होता है।

महात्मा बाब का सन्देश सर्वप्रथम ईरान के लोगों को प्राप्त हुआ। परन्तु अन्य देशों के मुसलमान अभी तक यह नहीं जानते थे कि उनका अपेक्षित अवतार आ गया है। इसलिए जब भिन्न–भिन्न देशों से हज़ारों मुसलमान तीर्थ यात्रा के लिए मक्का में एकत्रित हुए तो महात्मा बाब भी इस्लाम के इस पवित्र स्थान पर पहुँचे और वहाँ पर एकत्रित लोगों में उन्होंने घोषणा की कि उनकी आराधना का लक्ष्य प्रकट हो गया है और वे ही उनके प्रतिक्षित अवतार हैं। किसी ने भी उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, परन्तु 'बाब' अपनी घोषणा पूरी कर चुके थे।

जब महात्मा बाब अपनी मातृ–भूमि में लौट रहे थे कि सिपाहियों के उस दस्ते से उनकी भेंट हुई जो उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आया था। क्योंकि कट्टरवादी मुल्ला नहीं चाहते थे कि उस नए धर्म का प्रसार हो। मुल्लाओं ने हर प्रकार से ईश्वर के उस प्रकाश को बुझाने का प्रयत्न किया जो पवित्रात्मा बाब के वक्षस्थल में प्रदीप्त हो रहा था। उस दिन से महात्मा बाब को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। घोषणा के पश्चात् महात्मा बाब का अल्प परन्तु दैदीप्यमान जीवन अधिकतर कैदखाने में व्यतीत हुआ। दो बार उनको अत्यन्त ठंडे तथा कठिन पहाड़ी कैदखाने में भेजा गया। परन्तु कोई जंजीर अथवा कैद प्रभु की वाणी को फैलने से कभी रोक नहीं सकी। जब महात्मा बाब कैदखाने में थे तो उनके वफादार अनुयायियों ने उनके सन्देश को सारे देश में फैला दिया और उस थोड़े से समय में हजारों व्यक्तियों ने उनके धर्म के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

महात्मा बाब अभी 31 वर्ष के युवक ही थे जब उन्होंने उनकी हत्या करने का निश्चय किया। महात्मा बाब जानते थे कि परमात्मा की राह में उनको शहीद किया जाएगा। वे अपनी जान देने में भी प्रसन्न थे ताकि संसार के लोग अपने जीवन का अभिप्राय समझ सकें और ईश्वर तथा उसके अनन्त राज्य की ओर मुख मोड़ें। 9 जुलाई सन् 1850 ई0 उनके बलिदान का दिन निर्धारित था। प्रातःकाल के समय वह अफसर, जिसको महात्मा बाब को प्राणदण्ड देने का जिम्मेदार बनाया गया था, उनके पास जेल में आया। महात्मा बाब उस समय अपने एक अनुयायी के साथ बातचीत कर रहे थे जो उनकी अन्तिम आज्ञायें लिखता जा रहा था। अफसर ने महात्मा बाब से कहा कि उनको प्राणदण्ड देने का समय हो गया है और सैनिक आज्ञा–पालन के लिए मैदान में तैयार खड़े हैं। महात्मा बाब ने कहा कि उन्हें अपने शिष्य के साथ अभी बातचीत पूरी करनी है परन्तु वह अफसर हँसने लगा और बोला कि एक कैदी अपनी मनमानी नहीं कर सकता। जब महात्मा बाब को ले जाया जा रहा था तो उन्होंने कहा कि जब तक इस संसार में उनका मनोरथ पूरा नहीं हो जाता और वे अपनी बातचीत पूरी नहीं कर लेते तब तक पृथ्वी की कोई भी शक्ति उनको हानि नहीं पहुँचा सकती। अफसर ने महात्मा बाब की बात पर ध्यान नहीं दिया और उन्हें चौक में ले आया। उस समय महात्मा बाब का एक नवयुवक शिष्य, जिसका नाम मोहम्मद अली जनूजी था, भाग कर उनके पास पहुँचा और अपने प्रिय स्वामी के पाँव पकड़कर याचना करने लगा कि उसे भी उनके साथ मरने की अनुमति दी जाये। अफसर ने उसे परे धकेलने का प्रयत्न किया परन्तु मोहम्मद अली जनूजी रोता रहा और उससे इतनी दीन याचना की कि अफसर को उसे भी साथ लेना पड़ा।

चौक में जहाँ पर सैनिक महात्मा बाब को गोली का निशाना बनाने की प्रतीक्षा में थे, लोगों की अपार भीड़ जमा हो गई। उन सबने देखा कि महात्मा बाब तथा उनके प्रिय शिष्य को इस प्रकार बाँधा गया है कि उसका सिर अपने प्रियतम की छाती पर था। फिर वह महान क्षण आया। ढोल पीटे गये। तुरहियाँ बजाई गईं ज्यों ही तुरहियों की आवाज़ बन्द हुई, यह भयंकर आज्ञा सुनी गई "गोली चला दो।" निशाना साधे हुए सैकड़ों सैनिकों ने गोलियाँ चला दीं। धुएँ का एक विशाल बादल उस पूरे स्थान पर छा गया। सारा वातावरण बारूद की गंध से भर गया। कुछ समय पश्चात् जब धुआँ साफ हो गया तो बड़े अचम्भे की बात देखने में आई। महात्मा बाब वहाँ कहीं नहीं नज़र आ रहे थे और उनका वफादार शिष्य बिना किसी हानि के वहाँ खड़ा था। सभी हैरान थे। बहुत से लोगों ने कहा कि चमत्कार हुआ है तथा महात्मा बाब स्वर्ग को प्रस्थान कर गये हैं। गोली चलाने वाली टुकड़ी तथा उनके नायक ने ऐसी असाधारण घटना पहले कभी नहीं देखी थी। महात्मा बाब को ढूँढ़ने के लिए प्रत्येक दिशा में अधिकारियों को भेजा गया। उसी अफसर ने, जो महात्मा बाब को जेल की कोठरी से लाया था, उन्हें धैर्यपूर्वक उसी स्थान पर अपनी वह बातचीत समाप्त करते हुये पाया जिसमें विघ्न डाला गया था। महात्मा बाब उस अफसर की ओर मुड़े और मुस्कुराते हुए बोले कि पृथ्वी पर अब उनका पवित्र मनोरथ पूरा हो चुका है और वे अपने प्रयोजन की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए अपना बलिदान देने के लिए तैयार हैं।

महात्मा बाब को एक बार फिर चौक में ले जाया गया परन्तु इस बार गोली चलाने वाली टुकड़ी के नायक ने उनकी हत्या में भाग लेने से इन्कार कर दिया। वह अपने सैनिकों को चौक से बाहर ले आया और उसने शपथ ले ली कि चाहे जो भी हो वह ऐसे निर्दोष धर्मात्मा युवक के रक्त से अपने हाथ कभी नहीं रंगेगा। मृत्युदण्ड के आदेश को पूरा करने के लिए सैनिकों की एक दूसरी टुकड़ी को बुलाया गया जब टुकड़ी गोली दागने के लिये तैयार हुई तब बाब ने भौचक्का देख रही हजारों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा था :–

"ओ दिग्भ्रमित लोगों ! यदि तुमने मुझ पर विश्वास किया होता तो तुममें से प्रत्येक ने तुम सब से अधिक ऊँचा स्थान रखने वाले इस युवक द्वारा प्रस्तुत किये गये उदाहरण का अनुसरण किया होता और स्वेच्छा से मेरी राह में अपना बलिदान कर दिया होता। वह दिन आयेगा जब तुम मुझे पहचानोगे, लेकिन उस दिन मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।"

इस बार सैकड़ों गोलियों ने महात्मा बाब तथा उनके वफादार शिष्य के शरीर को छलनी कर दिया। उनके सुन्दर मुख पर, जिस पर गोलियों के निशान नहीं पड़े थे, अब भी सुन्दर मुस्कान छाई हुई थी जिससे एक ऐसी महान आत्मा की शान्ति तथा प्रसन्नता प्रकट हो रही थी। जिसने मानव मात्र के लिये एक नये युग की घोषणा के हेतु अपने जीवन का बलिदान कर दिया था।

महात्मा बाब ईश्वर के एक महान अवतार थे। अपने सभी दिव्य आलेखों में उन्होंने कहा है कि उनके प्रकट होने का सबसे बड़ा उद्देश्य संसार को यह शुभ समाचार देना है कि शीघ्र ही सभी युगों का अपेक्षित ईश्वरावतार प्रकट होगा। उन्होंने अपने अनुयायियों को चेतावनी दी कि ऐसा न हो कि वे उसे "जिसे परमात्मा प्रकट करेगा" पहचानने में कभी असफल रहें। उन्होंने कहा कि जैसे ही वह उसका संदेश सुने तो सब कुछ छोड़कर उसका अनुसरण करें। महात्मा बाब ने बहुत–सी प्रार्थनाएँ लिखी हैं, जिनमें उन्होंने भगवान से याचना की है कि स्वयं उनका जीवन उनके उस प्रियतम पर न्यौछावर हो जाये "जिसे प्रभु प्रकट करेगा"। अपने लेखों में उन्होंने ईश्वर के अवतार बहाउल्लाह की दिव्य आज्ञा का भी हवाला दिया है और कहा है कि "उसके लिये यह अत्यन्त उत्तम है जो 'बहाउल्लाह' का अनुसरण करता है"।

महात्मा बाब की प्रार्थनाओं का उत्तर मिल गया तथा उनका वचन पूरा हो गया। उनके दिव्य मनोरथ के 19 वर्षों के पश्चात् प्रभु के अवतार बहाउल्लाह ने खुले रूप में घोषणा की कि वे ही वह अपेक्षित ईश्वरावतार हैं जिसके बारे में पिछले युगों के सभी ईश्वरावतारों ने भविष्यवाणियाँ की थीं।

वर्ष 2016–2017 के लिए राष्ट्रीय समितियाँ

टास्क फोर्स–बहाई चेयर फॉर स्टडीज़ इन डिवेलप्मंट

1. श्री लेसन आज़ादी
2. डॉ. अराश फज़ली
3. डॉ. (श्रीमती) शिरीन महालती
4. डॉ. (श्रीमती) जनक पल्टा मैग्लिगन
5. श्री सियामक ज़ाहेदी

न्यू एरा स्कूल कमेटी

1. डॉ. अराश फज़ली
2. सुश्री सुनीती झा
3. श्रीमती तूबा महाबत
4. श्री जयदीप महालती
5. श्री राजन सावंत
6. श्री ओमिद सियोशानसियान
7. श्री फेरिदून तगावी

नेशनल कमिटी फॉर प्रॉपर्टी एण्ड लीगल मेटर्स

1. डॉ. संदीप अब्रोल
2. श्री राजेश मीणा
3. डॉ. हामिद मोहाजर
4. श्री सुनील ओल्याई
5. श्रीमती डिजेना सुनावाला
6. श्री फारनूश फनायन

बहाई लिटरेचर रिव्यू पैनल (अंग्रेजी)

1. श्रीमती इज्ज़त अंसारी
2. श्री नईम हमदानी
3. श्री जिया इशरागी
4. डॉ. ए. के. मर्चेंट
5. सुश्री सुभा मोहन
6. श्रीमती मेनका तेली
7. डॉ. एस. वासुदेवन

बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट कमेटी

1. श्री अमित चंदन
2. श्री राजेश जीवनानी
3. श्री हरमीत सिंह कोहली
4. श्रीमती तूबा मुंजे
5. डॉ. शाहिन नूरेयाज़्दान
6. श्री संजीव उपाध्याय

टेम्पल कमेटी

1. श्री शाहिन जावेद
2. श्रीमती नेदा नूरेयाज़्दान
3. डॉ. गौतम सिंह
4. श्रीमती ज़ीना सोराबजी
5. डॉ. बेहनम ताई

बहाई हिन्दी ट्रांस्लैशन पैनल

1. डॉ. (श्रीमती) शिरीन महालती
2. श्री सुनीति चन्द्र मिश्रा
3. श्रीमती साधना मित्रा
4. श्री अरुण सिन्हा
5. श्री सुचित त्रिपाठी

बहाई लिटरेचर रिव्यू पैनल (हिन्दी)

1. श्री अब्दुल मजीद
2. श्री एफ. यू. शाद
3. डॉ. आर. बी. शर्मा
4. डॉ. आर. पी. सिंह
5. डॉ. आर. एस. यादव

समाचारचित्र



सिक्किम के तदौंग बहाई स्कूल में रूही पुस्तक–1 पर आधारित 'शिक्षक क्षमता निर्माण कार्यक्रम' 25 से 27 जून, 2016 तक आयोजित किया गया, जिसमें तदौंग, सरमसा और लिंके तीन बहाई स्कूलों के लगभग 60 शिक्षकों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले शिक्षक विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के थे। मित्रों को पाँच समूहों में बांटा गया, जिसमें दो समूह अंग्रेजी के और तीन नेपाली भाषा के थे। पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी दिये गये। कुछ मित्रों ने पाठ्यक्रम पर अपने अनुभव भी साझा किए।



ओड़िशा के श्री सुरेन्द्र नायक के सुपुत्र श्री सुब्रत नायक और असम के श्री आदित्य मजुमदार की सुपुत्री सुश्री नीतूमणी का विवाह 5 जून, 2016 को बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ। इस शुभअवसर पर अनेक बहाई मित्रगण शामिल हुए।

लखनऊ में संस्थागत बैठक का आयोजन

उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं उत्तराखंड की क्षेत्रीय बहाई परिषद द्वारा 18 से 20 जून, 2016 तक एक संस्थागत बैठक का आयोजन सिटी मांटेसरी स्कूल के सभागार में किया गया, जिसमें क्षेत्र में सेवारत स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सचिवों तथा कोषाध्यक्षों, समुदाय विकास समितियों के सदस्यों, समुदायसमूह स्तर पर सेवारत संयोजक और सहयोगी, पायनियर, मोबाइल ट्यूटर्स, क्षेत्रीय बहाई परिषद के संचार प्रभाग के सहकर्मी तथा क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान मंडल के सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में 43 समुदायसमूहों से 270 मित्रों ने अपनी उपस्थिति दर्ज़ की।

सलाहकार श्रीमती ग्लोरिया जावेद तथा श्री दृगपाल सिंह भी उपस्थित रहे, जिन्होंने बीच–बीच में वर्तमान पाँच वर्षीय योजना से सम्बन्धित आवश्यक जानकारियाँ और मार्गदर्शन दिये।

इस बैठक में क्षेत्रीय बहाई परिषद द्वारा तैयार किये गये एक प्रपत्र का अध्ययन किया गया। इस प्रपत्र के माध्यम से वर्तमान योजना के महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में, विशेषकर मील के दूसरे पत्थर तक पहुँचने के लिये क्रियात्मक प्रतिमानों को सुदृढ़ करने और मील के तीसरे पत्थर तक पहुँचने तथा बड़ी संख्या को अपनाने तथा जटिलताओं का प्रबंधन करने जैसी बातों पर चर्चा की गई। 29 दिसम्बर 2015, रिज़वान 2016 और 18 तथा 23 मई 2016 के विश्व न्याय मंदिर के संदेशों का अध्ययन भी बैठक के दौरान किया गया।

इस बैठक में उप–क्षेत्रीय तथा समुदायसमूह स्तर की योजनायें भी बनाई गईं, जिसमें विकास–चक्र, शिक्षण अभियान और समीक्षा बैठक जैसे महत्वपूर्ण विषयों का उल्लेख किया गया।

बैठक में युगल अवतारों के जन्मदिन पर इस वर्ष और अगले वर्ष के लिये अभी से तैयारियां शुरू कर देने पर बल दिया गया।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

राष्ट्रीय कार्यालय के जन–सम्पर्क विभाग की गतिविधियाँ

पृष्ठ 1 का शेष

संदेश भेजा गया – "बहुत हो गया, सात बहाईयों को कैद से मुक्त करें।"

• धार्मिक सह–अस्तित्व और विविधता के लिये सम्मान : विचार गोष्ठी

लिया – गुलाम रसूल देहलवी, पत्रकार; प्रो. जॉन दयाल, सदस्य, नैशनल इंटीग्रेशन काउंसिल ऑफ इंडिया और प्रो. ताहिर महमूद, भूतपूर्व अध्यक्ष, नैशनल काउंसिल ऑफ माइनॉरिटीज़।



गोलमेज सम्मेलन के प्रतिभागी चर्चा करते हुए

दिल्ली स्थित बहाई उपासना मंदिर के सूचना केन्द्र में धार्मिक सह–अस्तित्व और विविधता के लिये सम्मान विषय पर एक गोलमेज कार्यक्रम में कोई 50 लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। बुद्धिजीवियों और मीडियाकर्मियों ने अपने–अपने विचार व्यक्त करते



पत्रकार गुलाम रसूल देहलवी अपने विचार व्यक्त करते हुए

विचार–विमर्श का कार्यक्रम 18 जून को आयोजित किया गया। जिसमें निम्नांकित प्रतिनिधियों ने हिस्सा हुये सामाजिक एकता और सहिष्णुता जैसे विषयों पर बल दिया।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र / बहाई न्यूज में प्रकाशित कर सकें। *धन्यवाद !*

शिमला में तीन दिवसीय संस्थागत सम्मेलन

क्षेत्रीय बहाई परिषद, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू–कश्मीर द्वारा शिमला के बहाई भवन में विकास कार्यक्रम और सघन विकास कार्यक्रम वाले क्लस्टरों के लिए तीन दिवसीय संस्थागत सम्मेलन का आयोजन 24 से 26 कर मित्रों के बीच विचारों की एकता बनी। संस्थान प्रक्रिया से जुड़े हुए मित्रों के अनुभवों से और अधिक सीखने को मिला।

इसके अलावा कोष पर भी एक सत्र था। परिषद को, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के कोषाध्यक्ष से



शिमला बहाई भवन में आयोजित संस्थागत सम्मेलन में भाग लेने वाले मित्रगण

जून, 2016 तक किया गया। इस सम्मेलन में जींद, फरीदाबाद, रोहरु, जम्मू, गुड़गांव, शिमला, चंड़ीगढ़ और पंचकुला से लगभग 35 प्रतिभागी शामिल हुए। यह कार्यक्रम विश्व न्याय मन्दिर के 29 दिसम्बर, 2015 के संदेश पर आधारित था। संदेश के अध्ययन के माध्यम से मूल–गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित प्राप्त पत्र पढ़ा गया, जिसमें कहा गया है कि हम कैसे राष्ट्रीय कोष में देने वालों की अधिक–से–अधिक संख्या बढ़ा सकते हैं। बहाई उपासना मन्दिर के रखरखाव पर भी चर्चा की गई। इसके लिए प्रतिज्ञा पत्र भी मित्रों के बीच वितरित किए गए। अंत में, मित्रों ने अपने क्लस्टरों के लिए एक वर्ष की योजना बनाई।

निधन

• श्री एम. के. सिपानी

हमें यह बताते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि स्थानीय आध्यात्मिक सभा अजमेर के कोषाध्यक्ष श्री एम. के. सिपानी का निधन



3 जून, 2016 को हो गया। श्री सिपानी ने प्रभुधर्म के प्रचार–प्रसार हेतु कई उल्लेखनीय कार्य किये। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

कुल पृष्ठ संख्या–4
बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.07. 2016
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)